आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 314 ARYA SABHA MAURITIUS *1st Aug to 17th Aug 2015*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

भक्ति की महिमा

LA DEVOTION ABSOLUE EST GENIALE

ओ३म् कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते ।
तदिद्ध्यस्य वर्धनम् ।।

साम वेद २.१२.२

Om ! Kadou prachetasse mahe vacho devāya shasyate. Tadidhyasya vardhanam.

Sam Veda 2/12/2

<u>**Glossaire /Shabdārtha**</u> :

Mahe – grand, illustre
Prachetasse – grand intellectuel, érudit, savant, sage
Devāya – pour Le Seigneur
Kadou – n'importe quoi, même très peu.
Vachaha Shasyaté – paroles – en forme de prière,
Tatta itahi – c'est avec certitude
Assya – à ce sage /fidèle
Vardhanam – être bénéfique , faire progresser

<u>**Interprétation / Anushilan**</u>

Ce verset est en provenance du Sama Veda dont le thème principal est la dévotion.

Tout d'abord il faut que l'on sache ce que c'est que la dévotion, comment l'aborder et profiter le maximum de ses bienfaits.

Puis nous allons faire état de ce que pensent les gens et ce que les Vedas nous recommandent à ce sujet.

(i) La devotion

La dévotion est la pratique religieuse, avec beaucoup de ferveur, de la part des croyants pour la purification et l'élévation de l'âme menant vers le but ultime de la vie humaine sur la terre – La Félicité Eternelle (Moksha).

Cependant la dévotion ne s'arrête pas à la récitation de la prière en toute connaissance de cause, il y en à d'autres actions complémentaires. C'est l'adoption dans sa vie d'un code de conduite et des attitudes positives ou des valeurs universelles comme préconisées par nos livres sacrés – les Vedas.

Dans ce contexte, L'Arya Samaj, dont les enseignements sont basés sur les Vedas, a un projet de société qui trace la bonne voie à suivre par les fidèles pourqu'ils aient une vie bien réussie. Il n'est demandé à personne de consacrer toute une journée à la prière sans rien faire. Il faut travailler pour gagner sa vie honnêtement et c'est une autre forme de prière. Il est recommandé aux fidèles d'offrir quotidiennement une prière bien précise et de courte durée (15 minutes) consacrée au Prānāyāma et au 'Sandhyā' le matin et le soir. Ils peuvent aussi consacrer une trentaine de minutes à faire 'Agnihotra' et à la lecture de quelques versets des Vedas. Ensuite ils peuvent reprendre leur activités de tous les jours avec beaucoup d'entrain. *cont. on pg 7*

N. Ghoorah

सम्पादकीय

कर्मनिष्ठ युवकों का निर्माण

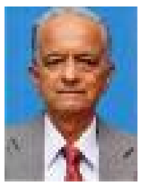

आज के युवक-युवतियाँ ही हमारे भावी परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्तरदायित्व सम्भालने वाले होंगे। एक संगठित परिवार, सुगठित समाज और एक समृद्ध राष्ट्र के निर्माता होंगे। हमारे जवानों की विद्वता, योग्यता, क्षमता पर हमारा भविष्य निर्धारित है। जिस प्रकार एक घर की मज़बूती उसके मज़बूत खंभों पर होती है, उसी प्रकार एक अखण्डित परिवार एवं समाज और अटल राष्ट्र की नींव हमारे जोशीले और होशीले युवकों द्वारा होती है। इसीलिए आज हमें अपने उभरते हुए युवक-युवतियों को निपुण बनाने की आवश्यकता है।

माता-पिता और गुरुजनों का परम कर्त्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करें, उनमें धार्मिक-भावना, मानव-प्रेम, सामाजिक सेवा, परोपकारी गुण, देश-भक्ति जैसे अच्छे-अच्छे गुण जागरित करें, ताकि भविष्य में हमारी संतानें एक आदर्श गृहस्थी, निस्वार्थ समाज सेवी और देश प्रेमी बने, जिनके श्रेष्ठ गुण-कर्म, स्वभाव से हमारा भविष्य चमक उठे।

हमारे युवकों के स्वास्थ्य, आचरण, कर्म, चरित्र, विद्वता तथा उनके नवीनतम आविष्कारों के बल पर ही हमारा भविष्य प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकता है। अतः हमें उनकी शिक्षण-व्यवस्था के साथ ही उन्हें मानव-मूल्य का पाठ पढ़ाना चाहिए। उन्हें संस्कारी बनाकर उनका चरित्र सुधारने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। उन्हें धार्मिक-ज्ञान और नीति आदि की जानकारी देनी चाहिए, यह सर्वमान्य है कि आज के सुयोग्य जवान ही अपने जोश और होश के बल-बूते पर भविष्य का निर्माण कर पाएँगे।

आज के इस वैज्ञानिक और तकनीकी युग में हमारी संतानों को कई नवीन आविष्कारों द्वारा अपनी बौद्धिक-शक्ति बढ़ाने की सुविधाएँ प्राप्त हैं। इन सुगम साधनों द्वारा उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करना चाहिए। जीवन सुधार नीमित उन्हें सज्जन बनाने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि वे चरित्रवान बनकर एक अच्छे नागरिक का प्रमाण दे सके।

युवावस्था उपजाऊ की अवस्था होती है। इस अवस्था में हम जैसा बीजारोपन करेंगे, वैसा ही फल प्राप्त होगा। अगर हम उनमें सद्‌गुणों का भाव पनपने देंगे तो अवश्य ही हमें उनके गुण, कर्मों से अच्छा फल मिलेगा। दुर्भाग्य से अगर हम उनमें दुर्गुण उभरने देंगे तो निसंदेह हमें कष्ट सहन करना पड़ेगा। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी संतानों को सुशिक्षित, धार्मिक, कर्मनिष्ठ और चरित्रवान बनाएँ, ताकि वे कल के श्रेष्ठ नेता बन सके।

आर्य युवा दिवस के अवसर पर हम आर्य परिवार यह संकल्प लें कि हम अपने बच्चों को बिगड़ने से बचाएँ, निरंतर उनके कर्म, चरित्र पर पूरा ध्यान दें, उनके दोषों को दूर करने का प्रयत्न करें, ताकि वे भविष्य में हमारा नाम रोशन कर सके। सभी वीर जवान यह संकल्प लें दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे।

बालचन्द तानाकूर

Message for Yuva Diwas 15 August 2015

Youths – our future

Dharamveer Gangoo, President Mauritius Arya Yuvak Sangh

Awake and take the lead my dear young men. You are the light to dispel the darkness of tomorrow, to overcome its miseries, to free valiantly all its obstacles and above all to cater for the peace of human-nature through all its angles.

As commonly stated "every dark cloud has a silver lining" every youth too does possess a genius quality in him. So, it is your entire responsibility to find it out and to display it to the whole world as did our saviours, namely; Swami Dayanand, Mahatma Gandhi and others.

Bearing the torch is neither too difficult nor too easy. Swami Dayanand has already completed everything by sacrificing his life on earth as a seeker of truth. He has already paved our way to eternal peace so that we can walk safely. All we have to do is to have our head on our shoulders and to tread fearlessly on his prints by observing the principles of the Arya Samaj as a caring human being. Young men, you are now in the factory in a raw state and badly need to be polished to carry the torch. This generation of citizens has great confidence in youths of today to safeguard righteousness in all fields of life.

Dear friends, you are the pride of your parents who are expecting great from you, so, do become the pride of the society as well and in the process, act so nicely that you can always be remembered as the light of this world.

May God bless you in this endeavour my young friends.

Message for 15 August 2015

ENVIRO – FRIENDLY ARYA SAMAJ

Bhushan Chummun, Environmentalist, BSc Agric, MSc Environ Pol (UK)

The Arya Samaj movement in literal translation is a society of learned and noble persons. Noble is an English adjective symbolizing a person having fine personal qualities and high moral principles. Followers of the Arya Samaj movement, 'Arya Samajists' tend to handle each and every matter with utmost care and with a judicious approach. The Arya Samaj not only promotes social work, education, pathway to righteousness but also educates our society towards the preservation and conservation of our environment.

One of the main actions of an Arya Samajist is to perform Yajna. Yajna is the burning of wood, samagris, clarified butter (Ghee) together with other beneficial substances to generate a fine and pleasant smell. It is this smell that renders hawan valuable to the environment. The air touches the burning fire and scientifically is purified just like water is boiled on fire and becomes purified. Germs, bacteria, non beneficial insects and other harm causing micro organisms are destroyed. The fumes given off from the hawan kund removes any foul odours, get diffused in the surroundings and has the ability to purify the environment.

cont. on pg. 2

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

श्रावणी प्रतिपदा शनिवार सम्वत् २०७२ दिनांक १ ली अगस्त २०१५ को प्रातः ९.३० बजे आर्य भवन में आर्य सभा ने एक भव्य महायज्ञ का आयोजन किया था, जिसका सीधा प्रसारण दूर-दर्शन द्वारा हुआ था। सब मिलाकर १२ यज्ञकुण्ड रखे गये थे। सभा ने वेद प्रचार समिति की ओर से माँग की थी कि हरेक कुण्ड के आसपास हर ज़िले के पुरोहित परिवार सहित बैठेंगे ऊपर मंच पर वेद प्रचार समिति के प्रधान भाई बालचन्द सपत्निक बैठे थे।

मंच पर भारत से आये हुए स्वामी विश्वानन्दजी महाराज के साथ तीन आचार्य - जीतेन्द्र पुरुषार्थी, विनोद शर्मा, और डा० जितेन्द्र चिकारा विराजमान थे। सभा के पुरोहित, पुरोहिताओं के साथ सभा प्रधान डा० गंगू, उपप्रधान एस.प्रीतम आदि कार्य की शोभा बढ़ा रहे थे। वर्तमान सरकार के कर्मठ मंत्री राजेश्वर दयाल जी ने पहला भाषण दिया।

अभी तक तीन कार्यक्रम दो-दो घण्टों का सीधा प्रसारण होता आया था। श्रावणी यज्ञ का प्रसारण पहली बार हुआ। विशेषता यह थी कि बीच बीच पं० यश्वंतलाल चुड़ामणि ने यज्ञ के मुख्य मुद्दों पर फ्रेंच भाषा पर प्रकाश डाला ।

एक अद्वितीय बात यह हुई कि आज ही शाम से ठीक साढ़े सात के समाचार से पहले आर्य सभा की ओर से पर्दे पर एक वेद मंत्र प्रदर्शित किया गया, जिसका संक्षिप्त अर्थ फ़्राँसीसी ज़ुबान में दिया गया। मंत्र की एक तरफ़ स्वामी दयानन्द का भव्य चित्र और नीचे दूसरी तरफ़ चारों वेदों के चित्र रखे गये। यह पूरे महीने तक दिया जाएगा विभिन्न मंत्रों के अर्थ दिये जायेंगे।

प्रमाण पत्र-वितरण एवं स्वागत

शनिवार ता० ०१.०८.१५ को दोपहर २.०० बजे पाई आर्य समाज मंदिर में डी.ए.वी, कॉलिज के स्नातकों द्वारा यज्ञ सम्पन्न के बाद जापान से आये हुए हिन्दी के विद्वान् Prof. Kazuhiko Machida and Prof. Oda from Tokyo, University of Foreign Studies Japan का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच द्वारा आज तक जो अभूतपूर्व प्रगति हुई है उस पर प्रकाश डालते हुए पर्दे पर बताया जिसे सुनकर श्रोताओं को बेहद आश्चर्य हुआ। महाभारत में संजय द्वारा युद्ध का समाचार महाराजा धृतराष्ट्र को सुनाने की बात याद आ गई। आज कम्प्यूटर ने जो प्रगति की है उस पर सहज में यक़ीन करना मुश्किल हो रहा है। श्री बालेन्दु जी ने कहा कि आज अनुवाद की आवश्यकता नहीं। कोई फ़ोन द्वारा रूसी भाषा में बातें करें तो सुनने वाला अपनी भाषा में सुन सकता है। आज इतनी सुविधाएँ टेक्नोलोजी लायी है। सब तो सब, पुस्तकों के पृष्ठ पलटेंगे और कहानी का पात्र बातें करता नज़र आएगा।

गतांक से आगे

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।

पंडिता प्रेमिला सिरतन

आज दुख का साम्राज्य सर्वत्र फैला है। आज दुख में साथ खड़े होने को कोई तैयार नहीं है और सुख के हिस्सेदार अनेक हैं। कितने लोग अभावग्रस्त तथा दुखी हैं परन्तु सुखमय-जीवन जीने का प्रयास नहीं करते । वे आहार, निद्रा, भय आदि पाशविक कर्म में उलझ कर दुर्लभ जीवन नष्ट कर देते हैं।

पशु-रूपी इंद्रियाँ मनुष्य को तरह-तरह का नाच नचाती है। हम सुख-दुख के झूले में झूलते रहते हैं। वे सुख-दुख हमें नैतिक-अनैतिक कर्मों के कारण ही प्राप्त होते हैं। यदि हम इंद्रियों को संयम में रखने का पूरा प्रयास करें तो हमारे अन्दर गुण आ जाएँगे और हम सुखधाम प्राप्त कर लेंगे। इस प्रकार इंद्रियों को वश में करने से काया का सुख, आत्मा की शांति और मन की शक्ति बढ़ जाती है। श्रेष्ठ कर्म सुसंस्कारों से होते हैं। श्रेष्ठ संस्कार श्रेष्ठ स्मृति से होती है, जो सुख और ज्ञान की जननी है।

मंत्र में **'अन्नाद्येन समेधय'** कहा गया – अर्थात् प्रार्थना करते हैं कि भोग्य पदार्थों व जीवनोपयोगी पदार्थों से हम यजमानों का जीवन समृद्ध हो। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें भौतिक जगत् में भोग्य पदार्थों से परिपूर्ण करें। आज मनुष्य को बहुत से सुखद भोग पदार्थ उपलब्ध हैं, फिर भी वह दुखी है। भौतिक उपलब्धियाँ होते भी निराशा, हताशा, उदासी और नित्य उभरती नई-नई समस्याओं के काले बादल मन पर छाये हुए हैं। संसार में विकास तो होता जा रहा है पर जीवन में सुख, शांति, संतुष्टि आदि लुप्त होती जा रही है। हम इस विकास की चकाचौंध में मानवीय मर्यादाएँ, सामाजिक सीमाएँ लाँघते जा रहे हैं। हमारा चारित्रिक पतन हो रहा है। इस प्रकार उन्नति की दौड़ में नित नई योजनाएँ बनती हैं, परन्तु नित्य उत्पन्न होने वाली समस्याओं के आगे छोटी पड़ती नज़र आती हैं इसलिए वेद माता समेधय कहती है कि इन सब से बचने के लिए मुझे समृद्ध कर जिससे मैं अपने जीवन को स्वाहा व समर्पण करूँ ।

समेधय के संदेश द्वारा हम भौतिक सुख-सुविधा व पदार्थ को प्राप्त करते हुए दैनिक जीवन में धार्मिक मूल्यों को जगाएँ। प्रेम-भाईचारे की लुप्त-भावनाओं को जगायें। हमें अध्यात्म का संतुलन बनाकर चलना चाहिए। जहाँ हम भविष्य की चिंता कर धन संचय के पीछे दौड़ रहे हैं, वहीं पर थोड़ा समय आत्मचिंतन में लगाएँ, जिससे ऐशो-आराम के साथ पुण्य की पूंजी भी जमा कर सकें। शुद्धि तथा सात्विक वृति का विकास करने पर ही यजमान उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर उत्तम संतान, उपकारी-पशु ब्रह्मविद्या का तेज, भोग्य पदार्थ व जीवनोपयोगी पदार्थ प्राप्त कर सकेंगे ।

cont. from pg. 1

ENVIRO – FRIENDLY ARYA SAMAJ

The ash produced from hawan is obtained as a byproduct. This ash is very useful in agriculture. It is usually mixed with soil and manure and added to plants as organic fertilizers, enhancing plant growth and also rendering the soil more fertile and productive. Scientifically speaking any scientist would condemn hawan because any combustion process would at some point give off dangerous gases like Carbon Monoxide, Nitrous Oxides and Sulphur Dioxide. Hawan is a very slow combustion process, which reaches a maximum temperature of 600 degrees celcius. I wouldn't say that performing hawan doesn't emit these harmful gases. Instead, these are emitted in very small amount due to the slow and uniform combustion process and pose no harm to the environment and human health.

The world is moving through a wind of change where environment is being used as scapegoat for each and every progress and advancement. Performing hawan not only helps you to be a strong and noble person but also helps you to militate against environment degradation and also providing a solution to it. So, the solution to preserve our natural environment lies in doing more hawan.

Message for 15 August 2015

My dear Yuvas,

It is with great pleasure I write in the present newsletter.

Having served a full three year term as President of the Yuvak Sangh, I also feel honoured to have been the first lady Yuvak Sangh President and to have created a renaissance of the Yuvak Sangh. The establishment of several new Yuvak Sangh shakhas around the island of Mauritius has shown that our Arya Samaj families have the firm belief in our Arya Samaj and that we are moving in the right direction.

The Annual Dharmic Competitions and the Code of Conduct based on the Satyarth Prakash are two jewels, which I sincerely hope will continously enlightened our samaj and our youths in the best interests of our country.

The Arya Samaj cares for our yuvaks and this is why the Yuvak Sangh is now presided by an Educator, Shri Dharam Gangoo, who is also closely connected to the young generation and is thus able to carry forward the vision of the Yuvak Sangh.

I wish the Mauritius Arya Yuvak Sangh all the very best in all its endeavours.

Yours Sincerely,

Poonum Sookun-Teeluckdharry
Barrister at Law
President of Aryan Women Welfare Association 2015

Self-evaluation

Kaviraj Baboo (B.A. II Student), DAV Degree College, Pailles

- It is true that to err is human; however, if you repeat the same mistake again and again you can never be able to improve yourself.
- Some people are dynamic in their work, but every time they make a new mis take that hinders the progress and the success is prolonged. Keeping this fact in mind. One has to be aware of one's mistakes.
- Frustrated people blame the environment for their mistakes and they hold people responsible for their loss. They are never aware of their own mistakes and destroy harmony in relationships.
- One should sit in the solitary place, think over, and find out the true reason of the loss. One can find it in one's own mistake. Correct your mistakes and bring success in life. This is called "self-evaluation".
- Through "self-evaluation" one will achieve determination to overcome the obstacles on his/her path. For "self-evaluation" one needs a strong will power. This will power, if applied properly, brings you fruitful results. Your aim should be precise and accurate. You have to avoid many other temptations to achieve your goal and keep away bad habits.
- So my young friends, "keep watch on your own actions, examine them and make overall progress".

OM
The President & Members
Mauritius Arya Yuvak Sangh
under the aegis of
ARYA SABHA MAURITIUS
cordially invite you to attend the celebration of the

23rd National Arya Yuva Divas and 68th Independence Anniversary of India

Venue : Ramawtar Mohith Hall, L'Agrement, St. Pierre.
Date : Saturday 15th August 2015.
Time : 1.00 p.m. – 3.00 p.m.

***Chief Guest :** Hon. Leela Devi Dookun-Luchoomun, Minister of Education & Human Resources, Tertiary Education & Scientific Research*

***Special Guests :** Hon. Yogida Sawmynaden, Minister of Youth & Sports*
Swami Vishwanand Ji Maharaj, Acharya Jitender Purusharthi &
Dr. Vinod Sharma from India.

Several other distinguished guests will grace the function by their presence.

Your presence will be highly appreciated.

Arya Sabha Mauritius	Dr. O.N.Gangoo	H. Ramdhony	R.P. Ramjee
Mauritius Arya Yuvak Sangh	D. Gangoo	P.K. Boodhun	
	President	*Secretary*	*Treasurer*

'यो जागार तमृचः कामयन्ते'

जो जागत है सो पावत है

डॉ० (श्रीमती) चेतनाशर्मा बद्री

यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि 'जो जागत है सो पावत है जो सोवत सो खोवत है', एक भजन भी है 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है।' इस कहावत और भजन में मनुष्य को जागृत रहने का आदेश दिया गया है। यहाँ जागने से अर्थ है सावधान रहना, चौकन्ना होना, अपने आस-पास घटित घटनाओं, कार्यों व परिस्थितियों से अवगत होना। जो मनुष्य सावधान रहता है, वह ही इस संसार में प्रगति और उन्नति की ओर अग्रसर होता है । अतः वेद में कहा गया है – **'यो जगार तमृचः कामयन्ते'** - जो जागता है, उसे ऋचाएँ चाहती हैं। ऋचा का मौलिक अर्थ है 'स्तुति' अर्थात् प्रशंसा, जागने वालों की सभी प्रशंसा व स्तुति करते हैं। सोने वालों की प्रायः निन्दा की जाती है।

सामान्य-सी बात है जागने वाला अपने चारों ओर सचेत होकर देखता है। अपने आस-पास के पदार्थों का रहस्य पूर्ण रूप से जानने का प्रयत्न करता है। वह इस जगत व उसके पदार्थों का कारण खोजता है। तर्क, अनुसंधान व अन्वेषण से तथा शास्त्रों के अध्ययन से जान लेता है कि यह संसार आत्मा के लिए है, उसका अपना कोई प्रयोजन नहीं है। यह भी जान लेता है कि कम ज्ञान वाला अधिक ज्ञान वाले के हाथ का खिलौना बनकर रह जाता है। यह देखकर वह अज्ञान को दूर करने के लिए ज्ञानार्जन करता है। तथा ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन व अभ्यास कर ज्ञानवान बन जाता है। अतः जागने, आँखें खुली रखने का परिणाम यह है कि मनुष्य ज्ञानी बन जाता है।

इस संसार में ऐसे भी अनेक विद्वान् व ज्ञानी जन हैं, जो पढ़-लिखने के पश्चात् भी अशान्त व खिन्न रहते हैं, उनके चित्त की चंचलता व मन की व्याकुलता कम नहीं होती। जैसे नारद मुनि वेदादि शास्त्रों के अध्ययन के पश्चात् भी अशान्त थे। सनतकुमार जी के पास जाकर उपदेश की प्रार्थना करते हैं। सनतकुमार जी कहते हैं, आप क्या जानते हैं, जब तक यह ज्ञात न हो जाए, तब तक क्या उपदेश आपको दिया जाए? नारद जी बोले -

ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं
सामवेदमाथर्वणं .... भूतविद्यां
क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां
सपदिवजनविद्यामेतभ्दगवोऽध्येमि ।।

छा. उ. ७.१

अर्थात् मैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, व्याकरण, इतिहास, पुराण, पित्र्य, राशि, देव, निधि, देवविद्या, ब्रह्मविद्या, भूतविद्या, क्षत्र-नक्षत्रविद्या, सर्पविद्याआदि सब जानता हूँ।

परन्तु यह सब जानकर भी केवल मंत्रमात्र जानता हूँ, आत्मज्ञानी नहीं हूँ। मैंने सुना है कि आत्मज्ञानी शोक से तर जाता है, किन्तु मैं तो शोकयुक्त हूँ। नारद जी के इस कथन से स्पष्ट होता है कि केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं होता, हृदय में ज्योति जगाने के लिए आन्तरिक ज्ञान आवश्यक है। नारद जी सावधान थे, जागृत थे, उनके मन में जिज्ञासा थी जिससे उन्हें बोध हो गया कि पढ़ने के बाद भी मन अशान्त है, इसे शान्त कैसे किया जाए, शान्ति उसे ही प्राप्त होती है जो जागृत होता है क्योंकि वेद मंत्र कहता है – **'यो जगार तमु सामानियन्ति'** अर्थात् जागनेवाले को शान्ति प्राप्त होती है। निरन्तर जागृत रहने वाला यत्न करके अपना आचार-व्यवहार-आहार आदि सुधार कर परम शान्ति को पा लेता है ।

बुद्धि मैली होने पर चंचल होती है, शुद्ध होने पर शान्त हो जाती है। तब प्रत्येक पदार्थ का ठीक प्रकार से मनन कर सकती है। क्योंकि पदार्थों का मनन करने से उनमें परमात्मा के दर्शन होते हैं। तब कोई उलझन रह ही नहीं सकती। 'जिस अवस्था में ज्ञानी को यह ज्ञान हो जाता है कि सब पदार्थों में परमात्मा का वास है, ऐसे साक्षात्कारी को शोक व दुखः और मोह हो ही नहीं सकता। क्योंकि साक्षात्कार सोये हुए को नहीं हो सकता। जागने वाले को ही होता है, उसे ही शान्ति मिल सकती है। शान्ति भगवान् की कृपा से मिलती है, इधर-उधर खोजने भटकने से नहीं। इसलिए कहा गया है – **'यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः'** – अर्थात् जो जागता है भगवान् उसमें वास करता है, जब भगवान सब पदार्थों में व्याप्त है, तब इधर-उधर क्यों जायें? वह तो आपके अन्दर है, जागनेवाला, सावधान रहने वाला ही उसके दर्शन कर सकता है, अतः सदा जागते रहो। सो जाने से प्रमाद करने से मनुष्य को भय की सम्भावना होती है।

जो जागता है उसे ऋचाएँ चाहती हैं।

AUM

KRINVANTO VISHWAM ARYAM – MAKE THE UNIVERSE NOBLE

The President and Members
of
TYACK ARYA SAMAJ
under the aegis of
ARYA SABHA MAURITIUS
with the collaboration of
TYACK MAHILA SAMAJ & HINDI PATHSHALA
have the pleasure to invite you, your family, friends & relatives
on the occasion of
SHRAWANI

DATE : **Monday 17 to Saturday 22 August 2015**
VENUE : **Tyack Arya Samaj**

Monday 17 to Friday 21 August -- Time : 5.00 p.m.
* *Yaj*
* *Kirtan & Cultural Program*
* *Pravachan*
* *Sandesh*
* *Sandhya*

Saturday 22 August – Time : 4.00 p.m.
* Gaytree Yaj
* Kirtan & Cultural Program
* Pravachan
* Sandesh
* Procession
* Sandhya

Mahaprasad will be served everyday
Daily Yajna will be performed as from 1 Aug to 30 Aug 2015
(Weekdays & Saturdays – 5 p.m. & Sundays - 8 am)
Your presence will be highly appreciated

Sarvam Nuckcheda *President* — Kaviraj Cooblall *Secretary* — Avinash Gukhool *Treasurer*

वेद

लक्ष्मी जयपोल

सम्पूर्ण मानव जाति उन ऋषियों के ऋणी हैं, जिन्होंने मानव को वेद ज्ञान दिया। २००३ में यूनेस्को ने वेद का पाठन परम्परा को मानवता का अपूर्व विरासत माना है। वेद ही विद्या का स्रोत है और वेद का शिक्षण शाश्वत है। वेद में आत्मा, प्रकृति एवं सृष्टिकर्ता का वर्णन है। वेद में सैन्य, संगीत, कृषि, जंतु शास्त्र, स्वास्थ्य, स्थापत्य, कृषि, राजनीति, अर्थशास्त्र, सम्प्रेषण एवं शिल्पशास्त्र का ज्ञान है। वेद आध्यात्मिक विज्ञान के योग से एक परिशुद्ध एवं पूर्ण मानव की सृष्टि करता है जो वैयक्तिक एवं व्यावसायिक जीवन का सामना दृढ़तापूर्वक कर सके ।

वेद दिव्य है और अपौरुषेय है। वेद का ज्ञान उदात्त है और इसमें शाश्वत सत्य है। यह स्वतः प्रमाणित है। वेद में मानव जीवन के हर पहलू से सम्बंधित ज्ञान है जो देश, धर्म एवं जाति के परे है। दर्शन के प्रकांड मनीषी डॉक्टर राधाकृष्णन के अनुसार 'वेद तो मानव मस्तिष्क के प्राचीन दस्तावेज़ है।'आज विश्वव्यापीकरण के युग में वेद का महत्व है और निरंतर मौखिक परम्परा से उसका पठन किया है। वेद को शांति का शस्त्र माना गया है।

वेद की भाषा संस्कृत है। प्राचीनता के कारण उसे वैदिक संस्कृत कहते हैं। स्वामी महर्षि दयानंद सरस्वती आर्यसमाज के संस्थापक थे और वे एक प्रबुद्ध विद्वान् थे। उन्होंने वेद की हिन्दी में व्याख्या की और उनका प्रचार किया। वे वैदिक संस्कृत व्याकरण के पक्षधर थे। वेद ज्ञान का महासागर है जिसमें ईश्वर को निराकर, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, दयावान, न्यायसंगत एवं सच्चिदानंद माना है। ईश्वर का प्रथम एवं मुख्य नाम ओ३म् है। आर्य समाज का प्रतीक ओ३म् है।

स्वामी दयानंद जी ने वैदिक ज्ञान का प्रचार किया था और वे शिक्षाप्रेमी, विद्याप्रेमी एवं सत्यप्रकाश प्रेमी थे। उन्होंने ज्ञान का प्रचार बोलचाल की भाषा में किया और उन्होंने आर्यों के परम कर्तव्य को प्रतिपादित किया। आर्यसमाज के दस नियमों में उनको समाविष्ट किया। 'वेद का अध्ययन एवं पठन, पढ़ना-पढ़ाना एवं सुनना-सुनाना आर्यों का उत्तम धर्म है।' **'वसुधैव कुटुम्बकं'** वैदिक आदर्श है और इसका अर्थ विश्व एक परिवार है। विश्व साहित्य के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथों में वेद का स्थान नितांत गौरवपूर्ण है। भारतीय संस्कृति के मूलाधार ग्रंथ वेद है। स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार

'विदन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विदन्ति लभन्ते, विद्भन्ति विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सत्यविद्यां यैयैषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः ।'

वेद सभी मनुष्य की सत्यविद्या है और मनुष्य का काम है कि इस विद्या को जाने, लाभ उठाए एवं विचार-विमर्श करे। यह विद्या ज्ञान-पिपासु एवं इच्छुक लोग के लिए है।

लोकमान्य तिलक ने तो आर्यत्व एवं हिन्दुत्व का लक्षण ही यही दिया था कि वेदों को प्रमाण माना जाए– **'प्रामाणयबुद्धिवैदेषु'**। समस्त विश्वाड्मय में ऋग्वेद ही प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ है। पाणिनीय शिक्षा ने व्याकरण को 'वेद पुरुष का मुख' कहा था – **'मुखं व्याकरणं स्मृतं'** वैदिक वाड्मय अत्यंत विपुल है और वेद मानव-मात्र की प्रथम पुस्तक होने के कारण यह सम्पूर्ण एवं विशेष रूप से भारतीय धर्म और संस्कृति का मूलाधार है।

वैदिक शांति सार्वभौम शांति को समेटे हुए है और वह विश्व शांति का प्रथम सूत्र है। **'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मादानं विशिष्यते'** - सभी दानों में ब्रह्म दान विशिष्ट है। इसलिए वेद ज्ञान का प्रचार श्रेष्ठ माना गया है। मनु महाराज ने मनुस्मृति में लिखा है कि **'नास्तिको वेदनिंदकः'** – जो वेद की निंदा करता है वह नास्तिक है । वेदों में मनुष्य के लिए उपयोगी एवं कल्याणकारी ज्ञान है और महान् गुरु विरजानंद की मान्यता है कि 'वेद ईश्वर की वाणी है।'

श्रावणी संदेश

बिसनुदेव बिसेसर

वर्ष के बारह मासों में सर्वश्रेष्ठ और पवित्र श्रावण मास ही है। यह वेद मन्त्र, यज्ञ हवन, वैदिक प्रवचन और भाषण सुनने का समय होता है। भारत से अनेक प्रकाण्ड विद्वान् आते रहते हैं। वे हमारे एवं हमारे बाल बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने को सुविचार प्रकट करते हैं।

परमात्मा की असीम कृपा से ठण्डी हवा बहती है और सर्वत्र हरियाली छाई रहती है। सरकार की ओर से बच्चों को छुट्टी भी मिल जाती है और उन्हें हवन में ले जाने की सुविधा मिल जाती है।

श्रावणी मास में सभी आर्य मन्दिरों में, घर-घर में, पूरे देश में यज्ञमय वातावरण छाया रहता है। ओ३म् का झण्डा फहरता है। टी.वी. रेडियो पर कई कार्यक्रम आते हैं। देखा-देखी पाप, देखा-देखी पुण्य। हमारे समस्त हिन्दू वर्ग बड़े चाव से इस मास को पवित्र मास स्वीकार करते हैं। अनेक कार्यक्रम तैयार करते हैं।

यह सोने-पे-सुहागा बन जाता है। इसी मास में हम शादी-ब्याह रचाते हैं। गृह-प्रवेश, भूमि-यज्ञ एवं खास खरीदारी भी करते हैं। चाहे आर्य समाजी लोगों के लिए कोई विशेष छुट्टी नहीं रहती है, फिर भी हम बहुत लगन से अपने पर्व को मनाते हैं। हम आर्यसमाजी अपने देश धर्म, विद्या, सेवा के प्रति बड़े उत्साह से सेवा करते आ रहे हैं। यह स्वामी दयानन्द जी सरस्वती जी की कृपा है।

स्वामी जी ने हमें संमार्ग दिखलाया है। दल-दल से निकालकर मोक्ष की ओर अग्रसर किया है। नीरोग रहने का दुर्घटना से बचने का, आत्महत्या से दूर, युवकों को कुमार्ग से बचने का उपाय बतलाया है।

आज इस महीने में कम-से-कम हमें सभी परिवारों के साथ संध्या करनी चाहिए। अग्निहोत्र और वेद पाठ करना चाहिए। अपने परिवारसहित यज्ञ-हवन में भाग लेना चाहिए। पास पड़ोसियों को भी इस महान यज्ञ में आमन्त्रित करना ही चाहिए। वैदिक पुस्तिका आदि दान में देनी चाहिये।

पाप से बचने के लिए हम झूठ न बोलें, संयमी रहें। ओ३म् और गायत्री मन्त्र का जाप अवश्य करें। खेत में, दफ़्तर में, आर्य समाज की वैदिक धर्म की बातें करें। हमें अपने बच्चों को राम- कृष्ण-दयानन्द जैसे महान् बनाने को प्रोत्साहित करें । कल हमें देश, धर्म सम्भालना है। देश के नेता बनने हैं। दयानन्द के मार्ग पर चलकर समाज-सुधारक दूरदर्शी बनना है।

यह ही दुख-संकट को दूर करने का धन-दौलत पाने का, निरोग होने का पक्का मार्ग है।

SHRAWANI UPAKARMA MAHOTSAV

Shrawani Upakarma:- Its Significance

By Sookraj Bissessur (BA Hons)

"May we O Lord, hear with our ears what is good,
May we see with our eyes what is good
And praising you with healthy body and mind,
Enjoy the bestowed term of life in dedication
To all that is noble and good".
Rig Veda

We are celebrating the "Shrawani Upakarma Mahotsav". But what is so special about it? Is n't it high time for us "Aryans" to undergo a transformation of our mind set to face life with determination, courage, confidence, more fervour and spiritual energy?

One of the most important Vedic Festival is – Shrawani Upakarma.

It is being celebrated during the entire month of Shrawan, which eventually coincides with the monsoon season in "Aryavarta" (now India). It should be noted with profound concern that at the very outset of the monsoon rains, Rishis, Seers, Savants and Learned. Sages moved to villages and towns, leaving behind them their hermitage temporarily (small dwelling of a hermit in the forest). Searching and seeking shelter are interpreted as a natural urge and surge amongst human beings. The very mettle of these seers and sages was of no simple or ordinary stock. On one hand they get the support of householders and on the other hand their visits are greatly beneficial to all people among whom they stay during the rainy season –by as they perform Yajnas, Mahayajnas, hold discourses on the Vedas and teach people to read the Vedas. For this year (2015) – Shrawan Mass (Month) starts on August- 1st to terminate on August 29th on Raksha Bandhan day (festival) as per the Vedic Calendar 2015.

Shrawani Upakarma – The Festival of Profound Study.

Man's Intelligence makes of him the living being of the highest order on earth. The Spiritual Power of his brain is virtually fantastic. His mastery over writing, reading and listening tremendously contributes to maintain him in this privileged and spiritualized position. In this very context, it goes without saying that Shrawani is the festival of reading, learning and listening of the very words of wisdom of the **VEDAS**. During primitive days, this festival used to be celebrated during the entire rainy season. The opening ceremony used to be performed.

On the Purnima - day of full moon in the month of Shrawani Upakarma- which means resumption. To encourage all people to undertake the serious study of the **Vedas** – is the main objective of this festival.

On the other hand, owing to heavy rainfall most people worked only for a few hours. Hence, it became a common practice for them to spend their spare time in reading, contemplating and scrutinizing the holy Vedas – a rare – but glorious opportunity for all to study the scriptures in the midst of the Rishis.

Of All True Knowledge – The Veda is Supreme.

Revealed by God, the Veda is – the Supreme Authority. In fact, the explanatory books of the Vedic thoughts and concepts (Brahmanas, Upanishads, Smiritis, Darshana, Shastras and the epics – Ramayana and Mahabharata) are truly all man-made composed by the Rishis. Without any exception they all whole-heartedly proclaim the Veda to be of Divine origin. The Veda is the true book of divine, spiritual and material knowledge – that is Science, Technology and other branches of knowledge.

This Rich and Precious Heritage (the Vedas) was brought back to us by Maharshi Swami Dayanand and the Arya Samaj set up by him.

During the long period of ignorance, the Hindus had also forgotten about the real purpose of the festival(s) since, even the Shrawani Upakarma festival was in complete state of oblivion. The Arya Samaj has revived the festival of Shrawani Upakarma which is now being celebrated by all the followers of the Vedic Dharma.

As a matter of fact, it should be noted that the very importance of this festival is much felt in these days of suffering and toiling. But, even today, most Hindus are ignorant and are not conscious about the teachings of the Vedas. The "Shrawani Upakarma" is indeed an opportunity and also an eye-opener for them to study the Vedas and the other Sacred books or to attend "Satsangs" so as to know more about the Science of Spirituality and Divinity. By so doing, little by little, We shall be able to acquire the Satvidyaa (that is Right Knowledge) as revealed in the Vedas and thus be able to know and understand Dharma.

In the same vein, we should always bear in mind that our implicit faith in the Almighty God becomes our great strength because its source is the very presence of God within us. Let us, therefore practise our faith fervently and experience the joy of feeling good. Let our living become a glorious experience which is sweetened by love and tolerance! Let us also revere this "Shrawani Mass" and show that we are divine in our being! Our conduct and behaviour must show our faith in the Divinity. Let us also understand that a peaceful state of mind not only benefits us but all those who come into contact with us.

The Gaytri Mantra – A Huge Source of Inspiration.

On this auspicious occasion of Shrawani Upakarma, may we be greatly inspired by **"Dhiyo Yo Naha Prachodayat"** praying to the Almighty to illuminate our intellect, enhance our initiatives and guide our mind and heart on the path of Righteousness! "Manurbhava"- would no longer be a Herculean- vision and mission. May we set foot on the path to transform ourselves into "Aryas" (persons with noble thoughts, deeds and behaviour.

In brief, it is crystal clear to deduce that Shrawani is the festival of knowledge. May God rekindles in our heart the love for the Divine knowledge and may it also enlighten our heart and home !

Brahma – Akshara Sammudbhavam !
The Veda comes from the imperishable !
Supreme Being *(Bhagavad gita)*
It's the Uparam – dharma" Supreme Duty of all Aryas to study the Vedas !"

Swami Dayanand Saraswatee

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 243-1025, Fax : 243-8576

फों जी साक आर्य युवक संघ का तीसरा वर्षगाँठ

रामझीतन सुश्री करिश्मा

रविवार १२ जुलाई २०१५, को शाम के १.०० बजे फों जी साक आर्यसमाज मंदिर में फों जी साक आर्य युवक संघ ने बड़े हर्ष और उल्लास के साथ अपनी तीसरी वर्षगाँठ मनायी। उस दिन मंदिर युवक एवं युवतियों (लगभग १३ से ३० वर्ष) से भरा हुआ था। उस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान डा० उदय नारायण गंगू जी एवं मॉरीशस आर्य युवक संघ के प्रधान श्री धर्मवीर गंगू जी उपस्थित थे। सभा की ओर से अनेकानेक महत्वपूर्ण महानुभाव : पाम्प्लेमुस आर्य ज़िला समिति के प्रधान डा० लालबिहारी जी, आर्य सभा मॉरीशस के सचिव श्री हरिदेव जी, उपकोषाध्यक्ष श्री तिलक जी एवं पास तथा दूर से आए हुए अनेकानेक अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सर्वप्रथम ध्वजारोहन समारोह किया गया और राष्ट्र गान गाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ पुरोहित श्री माणिकचन्द बुद्धु जी ने हवन द्वारा किया। सभी लोगों ने श्रद्धापूर्वक हवन में भाग लिया।

हवन के बाद, फों जी साक आर्य युवक संघ की प्रधाना सुश्री रामझीतन करिश्मा (दीया) ने सभागार में उपस्थित सभी मेहमानों का स्वागत किया एवं एक पावर पोंइंट प्रस्तुति से वहाँ के युवक संघ के तीन साल की यात्रा कराई। गुरुजी चमन और उनकी टोली ने ऋषि दयानंद पर अपने ३ भजन प्रस्तुत कर वहाँ संगीतमय वातावरण बना दिया ।

उसी पवित्र वातावरण में सभी को संबोधित करते हुए, मॉरीशस आर्य युवक संघ के प्रधान श्री धर्मवीर गंगू ने फों जी साक आर्य युवक संघ को बधाई दी और सभी युवकों को अच्छे मार्ग पर चलने का सन्देश दिया। श्री हरिदेव रामधोनी जी ने सभागार में उपस्थित सभी लोगों को महर्षि दयानंद द्वारा बताए गए राह पर अग्रसर होने एवं 'वसुदेव कुटुम्बकं' की भावना को जीवित रखने का सन्देश दिया। बीज वक्तव्य आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान डॉ० उदय नारायण गंगू जी द्वारा हुआ। उनकी आवाज़ एवं प्रभावशाली सन्देश से सभागार में उपस्थित सभी लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। डॉ गंगू जी ने फों जी साक युवक संघ को अपने इन तीन सालों में किए गए आयोजनों के लिए उन्हें शुभकामनाएँ दीं और युवाओं का जोश बढ़ाते हुए उन्हें भविष्य में और अच्छा काम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

उसी अवसर पर फों जी साक आर्य युवक संघ द्वारा आयोजित श्रुतिलेख प्रतियोगिता एवं चित्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें देश भर से १८० प्रतिभागियों ने सक्रियता के साथ भाग लिया था।

सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं विजेताओं को पारितोषिक दिये गए। इसके उपरांत पंडित सुनील रामझीतन जी द्वारा शांति पाठ हुआ और सभी लोगों का जलपान से सत्कार किया गया ।

अखण्ड यजुर्वेद पारायण और गुरुपूर्णिमा

पंडित रामसुन्दर शोभन

प्रभात काल के उगते सूर्य के साथ यूनियन वेल के वैदिक केन्द्र के एक यज्ञ कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित हुई। उस अग्नि ने महायज्ञ का रूप लेकर अपना नाम यजुर्वेद पारायण रख लिया। शुक्रवार ता० ३१.०७.२०१५ के शुभ प्रभात में ६.०० बजे यज्ञ प्रेमियों ने गुरु पूर्णिमा मनाने की धुन में यजुर्वेद खोल लिया।

बुधवार २९.०७.२०१५ की शाम में यज्ञ प्रेमी पं० श्याम दयबू जी के पवित्र मन में एक छोटी सी चिनगारी फूटी कि चलो 'गुरु पूर्णिमा' के दिन यजुर्वेद पारायण करें। यह चिनगारी वहाँ के उपस्थित पुरोहित-पुरोहिताओं की आत्मा में प्रस्फुटित हो गई और वह अग्नि शुक्रवार गुरु पूर्णिमा को प्रज्वलित हो गई। ग्राँ-पोर्ट के पुरोहितों और पुरोहिताओं के पूर्ण सहयोग से यज्ञ प्रारम्भ हो गया।

ब्रह्मयज्ञ से शुक्रवार का शुभारम्भ हुआ। बारी-बारी से आकर सभी पुरोहित और पुरोहिताएँ अपने अपने अमूल्य समय को उस महायज्ञ में आहूत करने लगे। कोई आता तो कोई जाता रहा, यज्ञ की अग्नि जलती रही। आहुतियाँ उस पवित्र अग्नि में लगातार दी जाती रहीं। वेद मन्त्रों का मधुर स्वर कानों में गुंजायमान् होने लगा। समिधाओं और सामाग्रियों की आहुतियों से वह अग्नि ऊपर उठती गयी। वहाँ के वातावरण के साथ ही वहाँ के लोगों को भी पवित्र करती गयी। यज्ञ की पवित्र धारा में हम सब बहते चले गये और पता ही न चला कि सुबह छः से कब शाम के छः बज गए। ईश्वर की कृपा से यजुर्वेद को आद्योपान्त पढ़ लिया गया और पूर्णाहुति तक यज्ञाग्नि एक बार भी न बुझी।

महाराज के इस महान् और पवित्र कार्य को सफलता देने में आचार्य जीतेन्द्र पुरुषार्थी जी, पं० सुनकसिंह जी, पं० सहजादा जी, पं० र. शोभन जी, पं० चातुरी जी, पं० पाइदीगाडू जी, पं० रामधनी जी, पं० ज्ञाना जी, पं० देबी जी, पं० खेदू जी, पंडिता प्रतिमा गरीबा जी, पं० म, सनासी जी, पंडित सोनी रामशरण जी, पंडिता अबिलक जी, यजमान श्रीमान् और श्रीमती राजनाथ जी और अन्य समाज के सदस्य और सदस्याओं ने अपने अपने हाथ बटाए ।

विशेषकर धन्यवाद पं० श्याम दायबू जी को जाता है, जिन्होंने इस शुभ कर्म को कार्य रूप देने में हमें प्रेरित किया।

अमृत बेला जागा सखे

प्रातः अग्निं हवामहे, प्रातः इन्द्र हवामहे ।
मित्रा वरुणा हवामहे, प्रातरश्विना हवामहे।

प्रातः (सवेरे प्रातःकाल) **अग्निं** (प्रकाशरूप ऊर्जावान्) **इन्द्रं** (परम ऐश्वर्य शाली) **मित्र** (सबके हितैषी सखा)
वरूण (वरण करने योग्य) **अश्विना** (बल विक्रमशाली ईश्वर का) **हवामहे** (आवाहन करें) ।

अमृत बेला जाग सखे, हर प्रमाद से भाग सखे,

प्रातः अग्निं हवामहे, प्रातः इन्द्र हवामहे ।
मित्रा वरुणा हवामहे, प्रातरश्विना हवामहे।
पक्षी भी कलरव करते हैं सुरभित अमृत बेला में,
पर्वत करते मौन साधना सुन्दर अमृत बेला में ।
नदियों, सरोवरों सागर का जल करता संकीर्तन सा,
वृक्ष लतायें बाँटा करते प्रभु-प्रसाद इस बेला में।
प्रभु से करले प्यार सखे, यह तन उसका उपहार सखे।
प्रातः अग्निं हवामहे, प्रातः इन्द्र हवामहे ।

अमृत बेला में झरता है झरना प्रभु के प्यार का,
पहले आता पहले पाता अटल नियम संसार का।
शान्ति और विश्रान्तिमिलेगी मनोव्यथायें हरने को,
बिछुड़ा मीत मिला करता है, धुल मिल बातें करने को।
करो मीत से प्रीति सखे, गाओ उसके गीत सखे,
प्रातः अग्निं हवामहे, प्रातः इन्द्र हवामहे ।

ऊर्जा का शुभ स्रोत सृष्टि का पालक और विधाता है,
सबका नायक सबका अगुआ अग्नि देव कहलाता है।
सबका मित्र वरेण्यं सबका, अजर अमर अविनाशी है,
कण-कण में व्यापक माने, जो मनुज वेद विश्वासी है।
पिता हमारा वही सखे, माता अपनी वही सखे,
प्रातः अग्निं हवामहे, प्रातः इन्द्र हवामहे ।

क्या लाए थे इस दुनिया में और क्या संग ले जायेंगे,
धर्म हमारा कर्म हमारा संग हमारे जायेंगे।
पात्र बने निज गुण कर्मों से, प्रभु की कृपा-वृष्टि होगी,
दुख न होगा शोक न होगा अमृतमयी तुष्टि होगी ।
वही है अपना मीत सखे, जीवन का संगीत सखे,
प्रातः अग्नि हवामहे प्रातः इदं हवामहे,
मित्रवरुणा हवामहे, प्रतारश्विना हवामहे ।।

शांति नगर, अध्यक्षा-आर्य महिला समाज - नई की मंडी, आगरा

विचार विश्व की सबसे बड़ी ताकत

डा. विनय सितिजोरी

विचार सब से बड़ी शक्ति व सम्पत्ति है। सभी प्राणियों में मानव ही केवल विचार कर अपना कार्य करता है। इसलिए विचार विश्व की सबसे बड़ी ताकत है। विचार में अपरिमित बल व उर्जा शक्ति है। विचार शहादत, कुर्बानी, शक्ति, शौर्य, साहस, त्याग व स्वभिमान है। विचार आग व तूफ़ान है, साथ ही शान्ति व सन्-तुष्टि का पैगाम है। लेकिन विचारों में कर्म की पूँजी अनिवार्य है। क्योंकि हज़ारों शब्दों से एक कर्म की ध्वनि अधिक सबल व तीव्र गुंजायमान होती है। अतः हम मात्र प्रवचन से नहीं अपितु आचारण से परिवर्तन करने की संस्कृति में विश्वास रखें।

कर्मयुक्त विचार ही ज्ञान है और ज्ञान की खान वेद है। 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विधते' ज्ञान का अर्थ मात्र जानना नहीं, वैसा हो जाना है। ज्ञान का अर्थ मात्र जानकारियाँ एकत्रित करना नहीं, अपितु वैसा आचरण करना है।

समुचित परिणाम के लिए समुचित कर्म ही मानव जीवन की गरिमा है। कर्म ही बीज है। जैसा हम बोते हैं, वैसा ही काटते हैं। अतः सदा चेहरे पर प्रसन्नता व मुस्कान रखो। दूसरों को सम्मान दो तुम्हें सम्मान मिलेगा। दूसरों को सुख दो। तुम्हें सुख मिलेगा। अपने माँ-बाप की सेवा करना, बुढ़ापे में तुम्हारे बच्चे, तुम्हारी सेवा करेंगे। यही सूत्र राष्ट्रवाद की दिशा में बढ़ने का बीज मंत्र है, प्रथम सीढ़ी है। आइए हम सब मिलकर राष्ट्र आराधना करें।

आर्य सभा मॉरीशस
परीक्षा बोर्ड
सूचना

आर्य सभा द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षाओं के छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि धर्म प्रवेश तथा धर्म रत्न की परीक्षाएँ प्रातः ९.०० बजे शनिवार १९ सितम्बर २०१५ को इन केन्द्रों में ली जा रही हैं ।

(१) डी.ए.वी. कॉलिज पोर्ट लुई
(२) डी.ए.वी. कॉलिज Morc. St. Andre
(३) लावाँचीर आर्यन वैदिक स्कूल
(४) वैदिक केन्द्र, युन्यन वेल
(५) वाक्वा आर्यन वैदिक स्कूल

यथा शीघ्र छात्रों को क्रम संख्या भेजी जा रही है।

डॉ० ज. लालबिहारी — *प्रधान*
श्री द. सिबालक — *मन्त्री*

How to motivate the youths in a group towards Social work

You must awaken the energy which is inside the members of the group. There is no money in voluntary youth work. Money would not be effective as a motivational technique and would have at best a "mobilizing" effect. What are the motivational factors which you can apply?

- **Goals :**
  A set goal generates fulfilment. The clearer and more attractive the goal is, the higher the level of motivation achieved to want to strive towards the goal. A goal which is set too high (excessive demand) just like a low target (too little) are absolute motivation killers.
- **Feedback :**
  Positive feedback spurs a person on but also a well communicated and reasonable (positively brought over) criticism or recommendation should be given.
- **Responsibility :**
  Delegate responsibility among the members of your association. That is proof of your trust and encourages motivation.
- **Small gestures :**
  Small gestures such as a "thank you", a small gift as recognition and a birthday wish are all well received.
- **Recognize success :**
  Let your members see success and be a part of the success. Without any opportunities for success or successful experiences, the motivation will reduce.
- **Example :**
  Whoever wants to motivate someone into doing something must be motivated himself. Members should observe very closely and if you are not a good example, you will not motivate your friend to do their job "exemplary ".
- **Scope :**
  It doesn't always have to run like clockwork and be based on a specific plan. Leave your members with the freedom to make decisions so that they can achieve their goals. Many paths lead to Rome!
- **Allow changes :**
  It is de-motivating if something runs like it has done forever and a day. Therefore - a change around is required. Routine is a motivation killer.

The motivation of the youth leader is an important ingredient in motivating the group to do something. No group will let themselves be pulled into action if the leader is not motivated. Your own motivation is therefore of utmost importance. Ask yourself a few questions and answer them truthfully

- How is it going at the moment? Are you stressed, easily annoyed and tired? Don't really have time?
- Or are you full of dynamism and energy?
- What do you expect from the next group time, free time or the next event planned together? Why are you going there? Why are you taking part? What do you want to experience? Do you want to convey something to the group, or do you simply want to be part of things?

Raj (Source: Internet)

OM
ARYA SABHA MAURITIUS
Competitions on the occasion of Satyarth Prakash Celebration 2015 organised by the Mauritius Arya Yuvak Sangh

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

RIVIERE DU REMPART ARYA ZILA PARISHAD

SHRAWANI UPAKARMA MAHOTSAV CELEBRATIONS - 31 JULY TO 28 AUGUST 2015

S/N	DAY	DATE	TIME	VENUE	RESPONSIBLE PANDIT
1	Fri	31/7/2015	4.00 p.m.	Petit Raffray AS/AMS 35/459	Pta. S. Baurun
2	Fri	31/7/2015	4.00 p.m.	L'Esperance Piton AS 006	Pt. R. Beekharry
3	Fri	31/7/2015	5.00 p.m.	Goodlands A. Mandir AS/AMS 22, 270	Pt. Gopal, Pta Baurun
4	Fri	31/7/2015	5.00 p.m	Reunion Maurel AS/AMS 15/243	Pt. Gopal, Pta Baurun
5	Fri	31/7/2015	5.00p.m	Pavillon-Cap Malheureux AS 85	
6	Fri	31/7/2015	5.00 p.m.	Roches Noires AS 074	Pt. D. Reechaye
7	Fri	31/7/2015	4.00p.m	Roches Noires AS 104	Pt. D. Reechaye
8	Sun	02.08.15	8.00 a.m	Plaine des Roches AS/AMS 113/301	Pt. C. Beeharry
9	Sun	02.08.15	8.30 a.m	Melle Jeanne Goodlands AS 36	Pt. Madhoo
10	Sun	02.08.15	8.00 a.m.	Poudre D'or Village AS 113	Pt. D. Reechaye
11	Mon	03.08.15	4.30 p.m	L'Esperance Trebuchet AS/AMS 9/412	Pt. D. Reechaye
12	Mon	03.08.15	4.30 p.m	Triangle Goodlands AS 162/AMS 237	Pta. S. Ramphul
13	Tues	04.08.15	5.00 p.m	Amaury AS /AMS 378/410	Pt. D. Reechaye & Pta. V.L. Reechaye
14	Thurs	06.08.15	3.30 p.m.	Melle Jeanne La hoterre-Goodlands AS 261	Pt. D. Gopal
15	Thurs	06.08.15	6.00 p.m.	Petit Raffray AMS 459	Pta. S. Baurun
16	Thurs	06.08.15	4.30 p.m	Petit Village, Goodlands AMS 198	
17	Thurs	06.08.15	1.00 p.m	Germain, Grand Gaube AMS 196	Pta. S.Baurun
18	Sun	02.08.15	8.00 a.m	Cottage Mapou AS 81	Pt. D. Gopal
19	Sun	09.08.15	8.30 a.m	Kings Road, Goodlands AS 200	Pt. D. Gopal
20	Sun	09.08.15	8.00 a.m	Plaine des Roches AS/AMS 117/301	Pt. C.Beeharry
21	Sun	09.08.15	4.30 p.m	Reunion Maurel AMS 243	Pta. S. Baurun
22	Mon	10.08.15	6.00 p.m	Roche Terre, Grand Gaube AS 369	Pta. S. Baurun
23	Mon	10.08.15	4.30 p.m	Triangle, Goodlands AS 162/AMS237	Pta. S.Ramphul
24	Tues	11.08.15	5.00 p.m.	Amaury AS/AMS 153/257	Pta. V.L. Reechaye
25	Thurs	13.08.15	5.00 p.m.	Petit Village-Goodlands AMS 198	
26	Sun	16.08.15	8.00 a.m.	Petit Village -Goodlands AS 385	Pta. S. Baurun
27	Sun	16.08.15	8.30 a.m.	Plaines des Roches AS/AMS 117/301	Pt. C. Beeharry
28	Sun	16.08.15	9.00 a.m.	Roches Noires AS 075	Pt. C. Beeharry
29	Mon	17.08.15	6.00 p.m.	Roche Terre, Grand Gaube AS 369	Pta. S. Baurun
30	Mon	17.08.15	4.30 p.m	Triangle AS162/AMS237	Pta. S. Ramphul
31	Tues	18.08.15	5.00 p.m.	Amaury AS/AMS 378/410	Pta. V.L. Reechaye
32	Thurs	20.08.15	5.00 p.m.	Melle Jeanne, Goodlands AS 36	Pt. R. Mudhoo
33	Fri	21.08.15	5.00p.m	Bois Rouge, Goodlands AS 126	Pt. R. Mudhoo
34	Sun	23.08.15	8.00a.m	Plaines des Roches AS/AMS 117/301	Pt. C. Beeharry
35	Sun	23.08.15	8.30a.m	Petit Village -Goodlands AMS 198	Pt. S. Noyan
36	Sun	23.08.15	8.00a.m	Allee Mangues Goodlands AS 146	Pt. R. Madhoo
37	Sun	23.08.15	9.30a.m	Atlas Road-Goodlands AS 160	Pt. R. Madhoo
38	Sun	23.08.15	9.00a.m	Poudre D'or Hamlet AS 073	Pta. P. Lutchmun
39	Sun	23.08.15	3.30p.m	St. Francois AMS 229	Pta. Greedar
40	Sun	23.08.15	8.00a.m	L'Esperance - Piton AS 006	Pt. D. Reechaye
41	Mon	24.08.15	6.00p.m	Roche Terre, Grand Gaube AS 369	Pta S. Baurun
42	Mon	24.08.15	4.30p.m	Triangle AS162/AMS237	Pta. S. Ramphul
43	Tues	25.08.15	5.00p.m	Amaury AS/AMS153/257	Pta. V.L. Reechaye
44	Thurs	27.08.15	4.30 p.m.	L'Esperance Trebuchet AS/AMS 9/412	Pt. D. Reechaye
45	Thurs	27.08.15	8.30p.m	Petit Village Goodlands AMS 198	Pt. Noyan
46	Thurs	27.08.15	5.30p.m	Melville Grand Gaube AS 316	Pt. R. Madhoo
47	Fri	28.08.15	5.00p.m	Bois Rouge, Goodlands AS 126	Pt. R. Madhoo
48	Fri	28.08.15	5.15 p.m.	Belle Vue Maurel AS /AMS051/453	Pt. C. Beeharry
49	Fri	28.08.15	4.00 p.m.	Roches Noires AS104	Pt. D. Reechaye
50	Fri	28.08.15	5.00 p.m.	Roches Noires AS 74	Pt. D. Reechaye
51	Fri	28.08.15	5.00 p.m.	Germain Grand Gaube AS206	Pt. D. Gopal
52	Sun	30.08.15	8.00 a.m	Plaines des Roches AS/AMS 117/301	Pt. C. Beeharry
53	Mon	31.08.15	3.30 p.m.	Roches Noires AS 107	Pta. B.Greedar

Shrawanee Yajna -- from 31st July to 28th August in these Arya Samaj Mandir as from 5.00 p.m to 6.30 p.m.

(1) L'Esperance Piton Arya Samaj No.006
(2) Reunion Maurel Arya Samaj No.15 and Arya Mahila Samaj 243
(3) Goodlands Arya Mandir No.22 and AMS 270
(4) Petit Raffray Arya Samaj No35 and AMS 459
(5) Cap Malheureux Arya Samaj No.85
(6) L'Esperance Trebuchet Arya Samaj - Everyday - 4.00 p.m as from 1st August to 30th August 2015.
(7) Amaury Arya Samaj - Everyday - 4.00 p.m
(8) Triangle Arya Samaj No.162 /No.237 -- Every Monday as from 4.30p.m by Pta. Suttee Ramphul ji
(9) Shrawani Yajna at Bisnoodev Bissessur Residence on 06th August at 4.00p.m by Pt. Jodhun ji.

Soodhir Kanhye : Vice-President Riviere du Rempart Arya Zila Parishad

OM

Moka Arya Zila Parishad

Shrawani Mahotsav 2015

Samaj	Date	Time	Priest	Chapters
1. Camp Thorel A.M.S.	14/8	3.30	Pt. Fakoo	14 & 15
2. Camp " "	15/8	4.00	Pt. Fakoo	16 & 17
3. Moka Arya Samaj	14/8	4.30	Pta. Maheeputh	18
4. Moka " "	15/8	4.30	Pta. Maheeputh	19
5. Upper Dagotiere A.M.S.	16/8	8.30	Pt. Boojhawon & Tacoory	20
6. Dubreuil A.M.S.	16/8	9.00	Pt. Fakoo & Pta. Saullick	21 & 22
7. Petit Verger A.M.S	16/8	2.00	Pta. Maheeputh	23
8. Lower Dagotiere A.S.	20/8	4.00	Pt. Boojhawon & Pta. Tacoory	24 & 25
9. Malenga A.M.S.	21/8	1.00	Pta. C. Bumma	26 & 27
10. N. Decouverte A.M.S.	21/8	2.30	Pta. T. Bumma	28 & 29
11. N. Decouverte A.M.S	22/8	8.30	Pta. T. Bumma	30, 31 & 32
12. N. Decouverte A.M.S	22/8	2.30	Pta. T. Bumma	33
13. N. Decouverte A.M.S.	23/8	8.30	Pta. t. Bumma	34 & 35
14. Upper Dagotiere A.M.S.	22/8	3.00	Pt. Boojhawon & Pta. Tacoory	36 & 37
15. Upper Dagotiere A.M.S.	23/8	8.30	Pt. Boojhawon & Pta. Tacoory	38, 39 & 40

16. **Moka A.J.P. at Camp Thorel 5th Sept. 3.00 -- Purnahutee Pt. Fakoo & Other Pandit/Panditas**

Pt. S. Fakoo

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

FLACQ ARYA ZILA PARISHAD

SHRAWANI UPAKARMA CELERATIONS 31st July to 30th August 2015

S/N	DAY	DATE	TIME	VENUE	RESPONSIBLE PANDITS
1.	Sun	16/08	8.00 a.m.	La Gare AS 349	Pt. S. Ramkalawon
2.	Sun	16/08	8.00 a.m	Pont Praslin AS 21	Pt. Ramdu
3.	Sun	16/08	9.00 a.m.	Shanti Nagar AMS 177	Pt P.Durumdur
4.	Mon	17/08	2.00 p.m	Quatre Cocos AMS 431	Pt. P. Durumdur
5.	Tues	18/08	4.00 p.m	Laventure AS 245	Pt. S. Ramkalawon
6.	Wed	19/08	4.00 p.m	Camp de Masque Pave AS 103& AMS 331	Pt. D. Ramsurrun
7.	Thurs	20/08	4.00 p.m	Camp de Masque Pave AS 103	Pt.D. Ramsurrun
8.	Thurs	20/08	3.30 p.m	Ecroignard AS90/ams 443	Pt. D. Ramsurrun & Pt. S. Sooknauth
9.	Fri	21/08	1.00 p.m	Queen Victoria AMS	Pta. L. Lilkunt
10.	Fri	21/08	4.30 p.m	Caroline AS 47	Pt. S. Sooknauth & Pta Lilkunt
11.	Fri	21/08	4.00 p.m	Camp de Masque Pave AS 103	Pt. Ramdu
12.	FrI	21/08	3.30 p.m	Ecroignard AS90AMS 443	Pta.D. Ramsurrun & Pta. P. Bhoojiawon
13.	Fri	21/08	1.00 p.m	Bonne Mere AS 29 / 440	Pt. D. Ramdu
14.	Fri	21/08	4.00 p.m	Pont Blanc AMS212	Pta. S. Dabeeah
15.	Fri	21/08	4.00 p.m	Bon Acceuil AMS 264	Pta. S. Domun
16.	Sat	22/08	3.30 p.m	Ecroignard AS90 & AMS 443	Pt. D. Ramsurrun
17.	Sat	22/08	1.30 p.m	Palmar AMS 164	Pta. S. Dabeeah
18.	Sun	23/08	3.30 p.m	Ecroignard AS90 & AMS 443	Pt. D. Ramsurrun
19.	Sun	23/08	3.00 p.m	St. Julien Village AS 372	Pt. D.Ramdu
20.	Mon	24/08	5.00 p.m	Clavet AS	Pt. D. Ramsurrun
21.	Tues	25/08	4.00 p.m	7Chemins Trou D'Eau Douce AS360-ams454	Pt. D.Ramsurrun
22.	Tues	25/08	4.00 p.m	La Forge AS 131	Pt. G. Toolooa & Pt. S. Ramkalawon
23.	Tues	25/08	1.00 p.m	Deux Freres AS19	Pta. S. Domuun
24.	Wed	26/08	5.00 p.m	Grande Retraite AS 111	Pt. G. Toolooa & Pt. S. Ramkalawon
25.	Thurs	27/08	4.00 p.m	Choisy AS 130	Pta. P. Koonja
26.	Fri	28/08	4.30 p.m	Ernest Florent	Pt. S. Ramkalawon
27.	Fri	28/08	3.00 p.m	St Julien Village AS 372	Pt. Ramdu
28.	Fri	28/08	4.30 p.m	Alle Cocos AS	Pt G. Toolooa
29.	Fri	28/08	4.00 p.m	La Tapie AS266	Pt. D. Ramdu
30.	Sun	30/08	8.30 a.m	Petite Retraite AS 116	Pt. S. Ramkalawon

Gayatri Bhawan-Riche Mare Flacq every Tuesday at 4.00 p.m
Yajna every Sunday at 8.00 a.m.
Laventure AS 245 /367 Everyday from 31st July to 24th August at 5.00 p.m to 6.00 p.m
Lallmatie Arya Mandir Every Sunday at 7.00 p.m
Mare la Chaux Arya Mandir Every Sunday at 7.00 p.m.

Pandit Shivsungkur Ramkalawon ji will be present in the satsangh as per his schedule of time.

D. Ramchurn	P.Jeewooth	S.Tackooree	Pt. S. Ramkalawon
President	*Secretary*	*Treasurer*	*Varisht Purohit*

OM

PAMPLEMOUSSES ARYA ZILA PARISHAD

SHRAWANI MAHOTSAV 31st July to 28th August 2015

S/N	DAY	DATE	TIME	Venue	RESPONSIBLE PANDITS	Veda Chps.	Verses
1.	Sat	15/8	3.00 p.m	CALEBASSE AS/ AMS	Pta. Ramkhalawon / Pta. Mungroo	15	65
2.	Sat	15/8	8.00 a.m	Mongout AS 05	Pt. Aukhojee / Pta. Pokhraz	10	43
3.	Sat	15/8	3.00 p.m	Fond du Sac AS/AMS 45/62	Pta. Mukhram / Pta. Jahul	16	66
4.	Sun	16/8	8.00 a.m	Fond du Sac AS/AMS 8/154	Pt. Jeerakhun/Pta Chintamunee	17	50
5.	Tues	18/8	10.40 a.m	9th Mile AMS	Pta Mukhram/ Pta Jahal	18	77
6.	Thurs	20/8	3.00 p.m	Morcellement Hamlet AMS	Pta. Lutchmun / Pt. Poonye	19	95
7.	Sat	22/8	3.00 p.m	Bois Rouge AS 269	Pta. Mungroo / Pt. Poonye	20	45
8.	Sun	23/8	8.30 a.m	Mount AS72	Pta. Mungroo / Pt. Poonye	20	46-90
9.	Sun	16/8	8.30 a.m	Solitude AS 215	Pta Lutchmun / Pta. Ramnath	17	51-99
10.	Sun	23/8	8.30 a.m	Pte Pointe aux Piments AS/AMS	Pta. Jahal / Pta. Ramnath	21	61
11.	Thurs	27/8	3.00 p.m	Darny 7th Mile AS 154	Pta Ramnath / Pta. Chintamunee	20	90
12.	Fri	28/8	3.00 p.m	Gde Pte aux Piments AS/AMS 246/265	Pta. Mukhram /Pta. Jahul	21	61
13.	Fri	28/8	3.00 p.m	Maheshwar Nagri AMS	Pta. Chintamunee	22	33
14.	Sat	29/8		RAKSHA - BANDHAN	NO MAHAYAJNA		
15.	*Wed*	*12/8*	*3.00 p.m*	*Trois Boutiques Arya Samaj No.60*	*PtaChintamunee/Pta Ramnath/PtDookhee*	*1*	*31*
16.	*Thurs*	*13/8*	*3.00 p.m*	*Trois Boutiques Arya Samaj No.60*	*PtaChintamunee /Pta Ramnath/ Pt. Dookhee*	*31+32*	*22+16 38*
17.	*Fri*	*14/8*	*3.00 p.m*	*Trois Boutiques Arya Samaj No.60*	*PtaChintamunee/Pta Ramnath/ Pt. Dookhee*	*34+35*	*58+22 80*
18.	*Sat*	*15/8*	*3.00 p.m*	*Trois Boutiques Arya Samaj No.60*	*PtaChintamunee/Pta Ramnath/ Pt. Dookhee*	*36+37*	*24+21 45*
19.	*Sun*	*16/8*	*8.30 a.m*	*Trois Boutiques Arya Samaj No.60*	*PtaChintamunee/Pta Ramnath/ Pt. Dookhee*	*38+39+40*	*28+13+17 58*

आशा है कि आप सब पूरे वेद मास भर श्रद्धा पूर्वक श्रावणी महोत्सव में भाग लेकर कि यह पवित्र मास है । आध्यात्मिक लाभ उठायेंगे और ऋषि ऋण से उत्ऋण होने का सफल प्रयास करेंगे ।

(२) इस अवसर पर प्रत्येक व्यक्ति नया यजोपवीत धारण करे और प्रत्येक मंदिर और गृह पर *'ओ३म् ध्वज* 'फहराना चाहिए ।

(३) यजमान को समय से आधा घंटा पहले यज्ञ स्थल पर पहुँच जाना चाहिए ।

<u>Five –Day Mahayajna 12 August – 15 August (Afternoon Session)</u>

SUNDAY 16 August (Morning Session), (2) Morcellement St. Andre Arya Samaj Mandir Nos 7 /136, Two-Day Mahayajna – 31st July 2015 – 01 Aug 2015 (Afternoon Sessions), (3) RAKSHA-BANDHAN – Saturday 29th August 2015 – No Mahayajna, (4) PURNAHUTI – “Nundlall Bhawan, Arya Mandir, Trois Boutiques, Triolet.

<u>CONTACT PERSONS</u> :-- Dr Jaychand Lallbeeharry -- Mob : 57681201, Shri Leckrajsingh Ramdhony -- Mob : 52566857, Pt. Manickchand Boodhoo (V.P), Pt. M. Jeerakhan (A.V.P).

Dr. J. Lallbeeharry	S. Ramdhonee	J. Ramkhelawon
President	*Secretary*	*Treasurer*

OM

SAVANNE ARYA ZILA PARISHAD

SHRAWANI UPAKARMA CELEBRATIONS 31 JULY TO 30 AUGUST 2015

S/N	DAY	DATE	TIME	NAME	ADDRESS
1.	Sat	15/ 08	9.00 a.m	Souillac Gurukul	Souillac Arya Bhawan
2.	Sun	16/08	8.30 a.m	Britannia Arya Mahila Samaj	Royal Rd, Britannia
3.	Sun	16/08	8.00 a.m	Bois Cheri Arya Samaj	Royal Road, Bois Cheri
4.	Sun	16/08	8.00 a.m	Camp Rabeau Arya Samaj	Royal Road, Riv. Du Poste
5.	Tues	18/08	9.00 a.m	Maigraj Goomany Cultural Centre	Souillac Arya Bhawan
6.	Tues	18/08	4.00 p.m	St. Aubin Arya Samaj	St. Aubin
7.	Thurs	19/08	3.30 p.m	Rajendra Prasad Ramjee M.S.K	Dumur Lane, Chamouny
8.	Thurs	19/08	2.00 p.m	Comlonne Arya Samaj	Comlonne Nouvelle France
9.	Fri	21/08	5.00 p.m	16eme Mile Arya Samaj	Swami Somanand Res., 16eme Mile
10.	Sat	22/08	9.00 a.m	La Flora Arya Samaj	La Flora Arya Mandir
11.	Sun	23/08	8.30 a.m	Grand Bois Arya Mahila Samaj	Royal Rd, Grand Bois
12.	Sun	23/08	3.00 p.m	Pru d'homme Arya Samaj	Pru d'homme, Riv. Des Anguilles, Sallick Res.
13.	Sun	23/08	9.00 a.m	Souillac Arya Samaj	Souillac Arya Bhawan
14.	Sun	23/08	8.30 a.m	Batimarais Arya Samaj	Batimarais
15.	Mon	24/08	9.00 a.m	Pta. Artee Mungroo	Souillac Arya Bhawan
16.	Wed	26/08	4.00 p.m	Bhagwandas Boolaky Res.	Royal Rd, Riv. Du Poste
17.	Thurs	27/08	2.00 p.m	Phoolbasseea Sewa Ashram	Chemin Grenier Sewa Ashram
18.	Fri	28/08	3.30 p.m	Surinam Arya Samaj	Balance Surinam (Mahayajna)
19.	Sat.	29/08	3.30 p.m	Surinam Arya Samaj	Balance Surinam (Mahayajna)
20.	Sun.	30/08	9.00 a.m	Chamouny Arya Samaj	Chamouny Arya Mandir
21.	Sun	30/08	8.00 a.m	Camp Rabeau Arya Mahila Samaj	Royal Rd, Riv. Du Poste
22.	Sun	30/08	3.00 p.m	Surinam Arya Samaj	Balance Rd, Surinam--(Purnahuti)

S.A.Z.Parishad — R. Ramjee M.S.K, *President* — B. Boolaky, *Secretary* — P. Boodhun, *Treasurer*

Yajna Coordinator : Pt. Virjanand Oomah ji and Acharya Satish Beetullah Shastree ji

OM

PLAINES WILHEMS ARYA ZILA PARISHAD

SCHEDULE FOR SHRAWANI YAJNA 2015

S/N	NAME OF SAMAJ	BCH N0	DAY	DATE	TIME	PUROHITS
1	Sangram AS/AMS	338/422	Sat	1st Aug	16:00	Pt.Kheddoo Pta P.Nossib Pta.R.Saulick
2	Balgobin Ashram (Prog. By Students of Arya Samaj Bchs)		Sun	2nd Aug	14:00	Pta. Saulick Pt. Kheddoo
3	Solferino AS/AMS	24/297	Sun	2nd Aug, 9thAug, 16thAug, 30thAug, 06thSept,	07:30 07:30 07:30 07:30 09:00	Pt. Kheddoo
4	Camp Fouquereaux AS	97	Tuesdays Sunday	04thAug 11thAug 18thAug 25thAug 30thAug	17:30 17:30 17:30 17:30 10:00	Pt. Kheddoo & Pta. Bahorun
5	Sangram Bhawan 1st Floor		Wed	05thAug	19:00	Pt.Kheddoo
6	Allee Brillant AS/AMS	59/234	Sat	08thAug 9thAug	15:30 09:00	Pta.Saulick
7	Old Moka Road B.Rose AMS/AS	280	Fri Sat Sun	 07thAug 08thAug 09th Aug	 15:30 15:30 08:30	Pt.J.Mahadeo Pta.Pelladoa Pta.Seeruttun Pta P.Dookhee
8	B.Bassin C.Lienard AS		Fri	14thAug 15thAug 16thAug	16:00 16:00 08:30	Pta.D.Loky Pt.Mahadeo Pt. Chunnoo
9	Clairfonds AS	283	Sun	09thAug	08:00	Pt.Kheddoo
10	Stanley AS/AMS		Sun	28thAug 29thAug 30thAug	16:00 16:00 08:30	Pt.Chunnoo Pta.N.Puttya Pta.Saulick
11	Paillotte AS		Sat	08thAug 09thAug	15:00 08:00	Pt.Seeraj Pt.Seeraj, Pt.Cusneea, Pt.Mahadeo, Pta.Pelladoa
12	Curepipe Rd AS/AMS NeergheenBhavan		Fri	04thSept 05thSept 06th Sept	16:00 16:00 09:00	Pta.Hinchoo Pta P. Seeruttun
13	Rishi Nagar AS		Sun	09th Aug 13thAug	08:00 10:00	Pta.Hinchoo
14	Hermitage AS		Sat Sun	15thAug 16thAug	16:00 08:30	Pt.Beekharry Pta.Bahorun
15	La Louise AS		Fri Sat Sun	21Aug 22Aug 23Aug	16:00 16:00 08:15	Pt.Choorumoney Pt.Seegoolam Pta.Seeruttun
16	Chateau Neuf AS		Fri	07th Aug	18:00	Pt.Mahadeo
17.	Quinze Cantons AS		Sun	13th Sept	08.30	

ओ३म् कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते ।
तदिद्ध्यस्य वर्धनम् ।।

साम वेद २.१२.२

cont. from pg 1

(ii) Que pensons-nous et que pensent d'autres gens à ce propos ?
Quelle est la voie à suivre selon les Vedas ?

Le peu de dévotion de notre part envers Dieu, n'est pas un coup d'épée dans l'eau, mais nous est très bénéfique. Il y a des gens irréfléchis, ignorants ou de mauvaise volonté, qui, par manque de foi en Dieu, essaient de chercher une échappatoire pour éviter cette pratique religieuse, de mettre en doute, dans l'esprit des fidèles, la vénération habituelle qui comprend une petite prière, un hymne et la lecture quotidienne de quelques versets de nos livres sacrés. Ils veulent faire accroire aux fidèles, pour les décourager à s'engager dans la voie spirituelle, que cette pratique n'aboutit à rien. Ils osent même prétendre que si l'on se dispense de la prière pour un jour, on ne perd rien.

A vrai dire, des gens pareils se trompent grossièrement par leur ignorance. Ils n'ont pas une idée exacte de la dévotion.

Selon les enseignements des Vedas, bien que notre adoration soit de courte durée et très modeste, mais avec foi, elle est toujours bien accueillie par Le Seigneur qui est miséricordieux.

De par son omniscience et son pouvoir suprême, il est de loin supérieur à nous tous. En conséquence, nous, les fidèles nous ne pourrons jamais formuler une prière digne de sa stature.

Bien que l'on soit d'une importance négligeable vis-à-vis du Seigneur, nous tissons un lien solide de notre foi en lui, en offrant notre vénération avec beaucoup de piété. Conséquemment il ne tardera pas à nous combler de bonheur et de prospérité.

Les ascètes nous rassurent que, le peu de temps qu'ils consacrent à la dévotion, les procure une communion parfaite avec le Seigneur, qui ne tarde pas à leur accorder sa bénédiction. Suite à cela, leurs esprits et leurs âmes sont purifiés et ils éprouvent un sentiment de bien-être et de bonheur suprême. ('Param Ānand).

Il se peut que le simple fidèle, avec un moment court de dévotion, ne soit pas gratifié d'autant de bénédiction par le Seigneur, qu'un ascète ou un saint-homme, (selon son statut) il doit, plus que jamais, sans se décourager, offrir sa prière avec beaucoup plus de dévotion. Il ne faut pas qu'il y ait un manquement (un arrêt), même d'un seul jour, dans l'accomplissement de son devoir spirituel afin de s'assurer de la bénédiction et de la protection du Seigneur contre tous les malheurs et les fléaux. En même temps cela devient une source d'inspiration au fidèle d'aller dans la bonne direction dans sa vie et de prendre les décisions correctes en tout ce qu'il entreprend.

C'est en priant Dieu tous les jours que l'on établit et consolide cette relation spirituelle avec lui. An cas contraire, ce lien vital et très subtil risque de se briser. L'on s'éloigne du Seigneur et l'on se dirige directement vers sa propre ruine.

Si l'on se trouve dans une telle situation, il faut vite se ressaisir, se raviser, se repentir et rétablir ce lieu sacré en renouant la dévotion, le plus vite possible pour son salut.

Pour y arriver, il faut beaucoup de bonne volonté et un effort soutenu de notre part.

Ce n'est que plus tard qu'on arrivera à se rendre compte que chaque jour, de notre dévotion n'a pas été une peine perdue.

Elle a été bénéfique en nous donnant la santé, la force physique et la vitalité, et en purifiant et en élevant notre esprit et notre âme.

Cependant, il y a une vérité criante qui saute aux yeux. De nos jours on passe le plus clair de son temps à s'engager dans les activités du monde matériel et à récolter ses fruits, voire ses bénéfices, avec beaucoup d'empressement. Conséquemment, on a tout le confort du monde et l'on vit dans l'opulence.

C'est un fait irréfutable que la plupart des gens, se trouvant dans une situation pareille, sont aveuglés par le pouvoir de l'argent, tombent dans l'immoralité, la corruption ou l'escroquerie. Des gens pareils font fi de la spiritualité, c'est-à-dire, de leur devoir envers le Seigneur et court irrémédiablement vers leur propre malheur et leur fin.

Mais sachons aussi que la spiritualité ou la dévotion envers Dieu est infiniment plus bénéfique que les gains du monde matériel. C'est parce que les gains matériels sont insignifiants et de nature éphémère (ne dure pas longtemps) et périssables, en face de la spiritualité et ses bénéfices qui sont éternelles, car elles proviennent de Dieu qui est aussi éternel de nature et le garant de notre salut.'

DAV COLLEGE MORC. ST. ANDRE

The promising students of DAV Morc. St. Andre who are not only good at studies but also in extra-curricular activities participated in the FRENCH DRAMA FESTIVAL 2015 organised by THE MINISTRY OF ARTS AND CULTURE during the month of June. they presented the play titled DRUVA-L'ENFANT QUI DEVINT L'ETOILE DU NORD." at preliminary level at RIVIERE DU REMPART YOUTH CENTRE under the guidance of MRS K. JHEELAN (Director) and MR RAMAWTA (CO-ORDINATOR).

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

NEPAL SOLIDARITY FUND

S/N	Name	Amount Received Rs
1	Rambaccus S/Madhu A/T Mohabeer/R Gunputh	100
2	Eline/Hossenbaccus/Meetoo/Dussa/Chumun	275
3	Dinnon/Rambaccus/Denis/Naiken/Y Ramsarun/ H Ramsurun/S Ramsurun/D Ramsurun	255
4	Pandit S D	200
5	Desh Raj Domun	400
6	Ramlakhan S	100
7	Radha Sunil	200
8	Gokooluck S	300
9	S M Gookooolell/Domun H/E Beekaree/Choomun k	175
10	B Jhamna	100
11	Rambhojun M	100
12	Bissoondoyal Family	100
13	Gokooluck Mala	100
14	Rambhojun Sachin	100
15	Ramyad Uttum	100
16	Ramyad Shivam	100
17	Ramyad Jaynarain	100
18	Balloo Manorunjun	200
19	Balloo Sangeetabye	100
20	Janku Aayush	100
21	Boodhun Deshana/Ramlochun Rekha	75
22	Pandita rroantee Bumma	200
23	Babita Gingoory	200
24	Taroo Sadhoocharan	100
25	Lalaura A Mahila	200
26	Indira Beelur	100
27	Deepwantee Bumma	100
28	Bhanoomatee Bumma	100
29	Satyantee Seeparsand	100
30	Indrawtee Kallottee	100
31	Vishwanee Bumma	100
32	Dhanwantee Bhoondah	100
33	Lokeshwari Beelur	100
34	Chandanee Jokhoo	100
35	Koomari Ramsing	100
36	Vedawtee Beezadhur	400
37	Roopwantee Bumma/Anjunawtee Gopaul	100
38	Amrita Jagessur/Saraswatee Nayal	100
39	Dewantee Seesahye	100
40	Ramkarrun Jokhoo	500
41	Dewkurrun Jokhoo	500
42	Leelawtee Dwarka/Jaywantee Bumma	45
43	Flower Senior Citizen Association	500
44	K Koonjul/D Koonjul/Rani Madoo/Lalita Madoo	125
45	Dharmawtee Ragoonundun	100
46	Joomuck/Ramgoolam/Nawoor	75
47	Nayma	100
48	Boullee	100
49	Rajen Tanakoor	200
50	Shantee Seegoolam	100
51	Seegoolam	100
52	Sati Seegoolam	100
53	Sonand C.	100
54	Tanakoor Sandeep	1000
55	Ayashi Sewsunkar	100
56	Naina Rajkumar	50
57	Saloni Rajkumar	100
58	Anjani Beekun	100
59	Avinash Ramdony	500
60	Kailash Chady	500
61	Jayraj Navyah	700
62	K L Khemloline	1200
63	Eddy D	200
64	R Ragoo	1000
65	Devnand M	100
66	Jahadjee Jaishree Devee	100
67	Kamlesh S Ramawta	100
68	Hurnaum Manisha	100
69	Seebunn Chandranee	100
70	A K Bhundhoo	100
71	Leon/Mutty	100
72	Bhagreeth Reshma	100
73	Veena/Gunputh	100
74	Amrita Gunputh	100
75	Pt Mooklall Lokmun	200
76	Vikram	100
77	Gayantee Dookhooa	100
78	Sharda Dhoomun	100
79	Vishal Lofur	200
80	N Lofur	200
81	Ramdeo Lofur	200
82	Leela Devi Lofur	100
83	Dhenish Radha/Chemantee M	100
84	Sita Mandhoo	100
85	Yuvansing R/Niranjanasing R	100
86	Vishnu Family	100
87	Muttur Rishi Kumar	200
88	Muttur Sumatee	100
89	Eshee Gopaul	100
90	Sekhar Mahadeo	100
91	D Mahadeo/Soudevi Baumy/S Seebaluck	105
92	Chaya Sanmukhiya	100
93	Amitah Sanmukhiya	100
94	Abedanand Bysooa	100
95	Indira Beeharry	100
96	Nowlata Dhanesh	500
97	S Roshan	100
98	Deerpaul Pratima	100
99	Jhumun Vikram	200
100	Satyam Sahadew	100
101	Nowlata Kunal/Diksha Sanmukhiya	35
102	Saroj Appalsamy	150
103	Bharatee Bysooa	200
104	Amrita Lallbaree	200
105	Rajen Sanmukhiya	100
106	Rishiraj Lochun	200
107	Lochun Savita	200
108	Pt Gianeswar Abeeluck	100
109	Jugdish Bhunjun	100
110	Soonit Bulloram	100
111	G Nilesh	100
112	Amol G	100
113	Jimla Arnav	100
114	Dindyal Gopalsing	200
115	Rajesh Appiah	100
116	Sudess Luchma	100
117	Bhunjun Sooroojlall	100
118	Bhunjun Santosh	100
119	Burrun Kevin	100
120	Beeharry Mahendra	100
121	Bhunjun Ramesh	100
122	Bhurosy Anil	100
123	Inderjeet Beersing	100
124	Runglall Parsad	200
125	C Boolaky	100
126	Premnath Boolaky	100
127	Dinesh Boolaky	100
128	B Boolaky	100
129	Arya Samaj No 63	100
130	Soodhir Chandra Kanhe	100
131	Anuballsing Kanhye	100
132	Manoj Beekharee	100
133	Manoj Bachwa	100
134	Sooberaj Kisto	100
135	Manoj Kisto /Soodhir K	200
136	Sunil Dindoyal	100
137	Ashvin Nathoo	200
138	Dhiraj Kutwaroo	200
139	Satish D	75
140	Rekha Kisto	100
141	Tarvina D/A Dookhun/S Ramdu	100
142	Encamah Appadoo	200
143	Ganga Appadoo	300
144	Rakshita thosadu Ramdu	100
145	Pooja Thosadu Ramdu	100
146	Mooneea Coomayah/Shrishti Ramdu/K Jugessur	100
147	S Dookhun	100
148	Devanand J	100
149	N Houlasse/Daniel/Shriya G/Anuradha R	100
150	Poonam R/Mila Rttun/Jyotirsha Dookhun/Balram pydatalli	100
151	S Goonjur	100
152	Adesh Jugessur	200
153	M Pydatalli/S Boobhun/V Pydutalli	100
154	B Bhoobhun/B Dookhun/R Dookhun/ Rajmani Appadoo	100
155	S Appadoo/K Appadoo/V Appadoo	100
156	H Appadoo/V Ramtohul/R Ruttun/T Ruttun	100
157	N Sookun	100
158	Mahenti Sewruth	500
159	I Ramchurn	200
160	Mahen Gangadhur	500
161	Viswas B	500
162	Roojaishan Permala	200
163	Rajahwari Koonja	100
164	Gunnoo	100
165	Ramesh Nundoo	2000
166	Pulohabeer	100
167	Samnanan Seegobin	1000
168	Juwaheer	200
169	S Bundoo	200
170	Surah P	500
171	Manilall Ramburn	500
172	Gianan D	100
173	Manoj Bhojoo	500
174	Dharam Konaye	500
175	Doomun Narain	500
176	P K Gajadhur	100
177	B Murden	100
178	Mona D	150
179	Dharmanand Ujodha	200
180	Kirtee Pusan	100
181	S Balluck	200
182	Nudoosingh	100
183	H Permala	100
184	Mayur Mahavir Dulloo	500
185	Meera Ramchurn	200
186	Dahoo Roopeshsing	200
187	Fagoosing Ramsurrun	200
188	Bhurtee N	200
189	Nunkoo Jairaj	300
190	Gukhool A	200
191	Babolall K	300
192	Nalini Rajee	100
193	B Reetoo	500
194	Sanjay B	500
195	Satyendra Peerthum	100
196	Suggun	100
197	Kamladevi Bujun	200
198	Clairfond Arya Samaj	1950
199	Pta Parvatee Luchmun	100
200	Gyneshwar Luchmun	100
201	Anitasha Luchmun	100
202	Tuesha Macoona	100
203	P A Ryan Kumar	200
204	Beetwantee Anjoree	100
205	Manish Saulick	100
206	Nirma Saulick	100
207	Jairaj Saulick	100
208	Menka Saulick/Leena Koonjul	100
209	Shakeela Emaambocus	200
210	Kamala Luchmun	100
211	Viswani Imrit	1000
212	Morc. St Andre Arya Mahila Samaj	1000
213	Parvatee Seedheeyan	100
214	Soodevi Peerthy	100
215	Mala Luchoomun	100
216	Suchita Mahabun	100
217	S. Ravi	100
218	S Devanand	50
219	Vishuaraj Seedheeyan	100
220	Hema Seedheeyan	150
221	Sakon Sundhoo	100
222	Snehlata Taucoory	100
223	Titra Manoruth	100
224	Rambaruth Oomawtee	125
225	Saloni Taucoory	100
226	Kamla Sundhoo	100
227	Vijaya Luxmi Bhoolee	100
228	Kanchani Bhageloo	100
229	Sila Sundhoo	200
230	Anandi Nowbuth	100
231	Shyamawatee Seedheeyan	100
232	Amrita Koonjbeeharry	200
233	Sangeeta Mahabun	100
234	Ajay Seebujun	100
235	Rajesh Boodhoo	500
236	Anandee Boodhoo	200
237	Santa Boodhoo/S Rema	100
238	Pritee Boodhoo	100
239	Divya Jhurreea	100
240	Premduth Oozeer	100
241	Vijay S	100
242	Gianduth Seebujun	100
243	V Sheebujun	100
244	M Frankee	100
245	Bhudye Prakash	100
246	Vedanand Bhudye	100
247	R Bhudye	100
248	Iswar R	100
249	Soondree S	100
250	S Ramjutun/Savita Ramgoolam	100
251	Avish Nagadoo/Suraj Sham	100
252	Ansuya Potayah	100
253	Boodhoo Veeraj Kumar	100
254	Vishnu Sookun/S D Boodhoo/Kishore Ramdary	100
255	Laxmee Sookun	100
256	Vishal Sookun	100
257	Giand Sookun	100
258	Vinod Seechurn	100
259	Kresoon Seechurn	100
260	Kevin Seechurn	500
261	Atish Coonjul	200
262	D Coonjul	100
263	Vidyanund Seechun	100
264	Sudesh Kumar B	100
265	Iswar Acharaz	200
266	Kamal Acharaz	200
267	Acharaz Anil	200
268	V. Oomah	100
269	La Chapelle Co-operative	100
270	Indul A	100
271	S Coonjul	100
272	A Sookun/M Soonarain	100
273	G Dabyparsad	100
274	D Meettooa	100
275	Ancharaz Sundhya	1000
276	Saraspathee Vencatasawmy	100
277	Satyadev Callun	100
278	Nemchand Neetoreea	200
279	Kavish Boolakee/D Manoj	100
280	Darshanand Munary	100
281	Poonam Munary	100
282	Mita R	100
283	Somindra Apadoo	100
284	Ravin Zbhawoo	100
285	Seewaa Bhawoo	100
286	Sewsunkur Callun	100
287	Rishi Appadoo	100
288	Viraj/B Munary/I Jogee	100
289	Navin Sahadoo	100
290	Yanisha Ramiah	100
291	Vishmee Devi C/Dadhan Beedasse	100
292	Daya Bhawoo	200
293	Veenakshee Bhawoo/Jaywantee Bhawoo	100
294	Mary Jane	100
295	Danied/S Moti/Dunillo/Janoo/Karl M	120
296	Purtul Vijay	100
297	Guy M	100
298	S Naiko	100
299	T G Naiko/Rakesh/S Sreekissoon/Veer	100
300	B Balee	200
301	Babou/Manoj S	100
302	Renal/Kissoon/Koonja/S Mohamadaly/Sabite Bookul	100
303	C Parbutee	100
304	Ramgoolam Anoop/Koonja P	100
305	Poorun Rajen	100
306	S Sangita	100
307	G Dinane	50
308	Sachidanand Danny	500
309	Sachidanand Hosseny/Rakesh Aukaj/D Prosand	125
310	Uma Devi Hosseny	100
311	Nitish C	100
312	Raj Seeballuck	100
313	K Seeballuck	200
314	Prabha J/Indira D	100
315	Prabha Hurkoo	125
316	Satish Manohur	100
317	Vinay/Gujudhur O/D Panjanaden	100
318	D Tuhaloo	100
319	Chunnoo S	200
320	Amborcallee N	100
321	A Malloo	100
322	T Ramdary/M Ramrooch/S Seebaluck	125
323	R Ubheeram	100
324	H Goorohoo/M Ghoora	100
325	J Sookharry	100
326	A Seernauth	200
327	D Seeburrun	100
328	H Mungur	100
329	B Mangur/V Gopal	100
330	Sateeanand Fakoo	200

आओ बच्चो । तुम्हें बताएँ बातें कुछ सच्ची-सच्ची

प्रश्न - यह सारा संसार किसने बनाया है ?
उत्तर - ईश्वर ने ।
प्रश्न - ईश्वर कहाँ रहता है?
उत्तर - वह सर्वव्यापक है। संसार में कहीं कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ परमात्मा न हो ।
प्रश्न - उसका मुख्य नाम क्या है ?
उत्तर - ईश्वर के अनेक नामों में सबसे श्रेष्ठ और मुख्य नाम ओ३म् है ।
प्रश्न - ईश्वर ने मनुष्य को सबसे अच्छी वस्तु क्या दी है ?
उत्तर - सबसे अच्छी वस्तु बुद्धि दी है और उसकी सहायता के लिए ईश्वर ने अपना ज्ञान दिया है ।
प्रश्न - ईश्वर का ज्ञान कौन सा है और वह कब दिया गया ?
उत्तर - वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वह सृष्टि के आदि में प्रकाशित हुआ था।
प्रश्न - वेद कितने और उनके नाम क्या हैं ?
उत्तर - वेद चार हैं । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ।

४० जनज्ञान मासिक